International Journal for Research Publication and Seminar
ISSN: 2278-6848 | Vol. 13 | Issue 1 | Jan - Mar 2022 | Peer Reviewed & Refereed

पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य के शैक्षिक मूल्यों के परिप्रेक्ष में नई शिक्षा नीति 2020 का अवलोकन

नेहा' शर्मा, डा० संजीव कुमार''

DOI : 10.36676/jrps.v13.i1.1635

अमूर्त

शिक्षा का वास्तविक कार्य शिक्षार्थी में मूल्यों का विकास करना है। अनेक मनीषियों एवं महापुरूषों ने तो मूल्य एवं मल्य –शिक्षा पर स ाहित्य की सृजन तक किया तथा उसे जन–जन तक पहुँचाने का कार्य भी किया। भारत के प्रचीन काल में आदिगुरू शंकराचार्य, गोस्वामी तुलसीदास , मुंशी प्रेमचन्द, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, कालिदास, आचार्य स्वामी रामानन्द एवं स्वामी विवेकानन्द तथा महात्मा गाँधी जैसे विद्वानों ने अपनी भाषा शैली में कविता, कहानी, महाकाव्य, उपन्यास या नाटक एवं उपदेशों के रूप में उच्च कोटि के साहित्य का सृजन कर मूल्यों का ज्ञान समस्त विश्व को कराया और समाज को दिशा प्रदान करने का प्रयास किया।

वहीं बदलते सामाजिक–आर्थिक परिवेश एवं शैक्षणिक प्रणालियों के आधुनिक समय में पं॰ श्रीराम शर्मा आचार्य के द्वारा मूल्यों की पुर्नस्थापना एवं शिक्षा के माध्यम से उनका मानव के अन्तःमन में समावेशन एक ऐसा ही प्रयास है।भारत की नई शिक्षा नीति 2020 में भी शिक्षा की मैकाले पद्धति का विरोध करते हुए एक ऐसी शिक्षा का प्रत्यय संकल्पित किया गया है, जो बालक में समाज कल्याण की भावना विकसित करने के साथ–साथ उसमें उच्च राष्ट्रीय, सामाजिक, नैतिक, आर्थिक एवं पारिवारिक–सांस्कृतिक मूल्यों का विकास कर उसे आदर्श एवं आत्मनिर्भर नागरिक बनाए। प्रस्तुत शोध–पत्र में शोधार्थी द्वारा पं० श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा प्रतिपादित मल्य शिक्षा के स न्दर्भ में भारत की नई शिक्षा नीति 2020 में स न्निहित मल्यों का अवलोकन करने का सार्थक प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्दः मूल्य , मल्य शिक्षा, नई शिक्षा नीति 2020।

भूमिक : भारत की अध्यात्मवाद की गौरवशाली ज्ञान–परम्परा और सुदीर्घ गुरूकुलतंत्र का सिंहावलोकन करने पर विदित होता है कि समस्त विश्व को अपना कुटुम्ब (एक ही परिवार) समझने की अनधा सुगन्ध हमने विश्व में बिखेरी है, हमारे ज्ञानतंत्र का जय घोष था–

अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम्।
उदार चरितानाम् हितु वसुधैव कुटुम्बकम्।।

मात्र इतना ही नहीं भारतीय अध्यात्म स्वयं के कल्याण के साथ–साथ सम्पूर्ण विश्व के कल्याण की भावना मन में धारण करता है–

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः

© 2022 Published by Shodh Sagar. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://jrps.shodhsagar.com

'शोधार्थी, कॉलेज ऑफ ऐजूकेशन, आई.आई.एम.टी. विश्वविद्यालय मेरठ (उ.प्र.) ''आचाय
', कॉलजे ऑफ ऐज ूकेशन, आई.आई.एम.टी. विश्वविद्य ालय मेरठ (उ.प्र.) सर्वे भद्राणि
पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्।।

अपने गौरवशाली अतीत से वर्तमान में देखने पर हमारे यही जयघोष हमें मुँह चिढ़ाते दिखाई देते हैं। विडम्बना यह है कि जिस देश ने "वसुधैव कुटुम्बकम्'' का जयघोष किया और जो "सर्वे भवन्तु सुखिनः'' की भावना से अनुप्राणित था, आज वही देश भाषा, जाति, वर्ग, सम्प्रदाय, व्याभिचार एवं भ्रष्टाचार की जटाओं से घिरा हुआ है, जिस विद्यालय और सर्व समाज के लिए हम गर्वित थे, उन्हीं के लिए आज हम गर्हित और जुगुप्सित हो गए हैं। इस वैश्विक मूल्य ह्रास के मूल में दो तत्व दृष्टव्य हैं प्रथम सामाजिक व्यवस्था और दूसरा हमारी शिक्षा व्यवस्था।

पं० श्रीराम शर्मा आचार्य का शैक्षिक दृष्टिकोण एवं मूल्यः

पं० श्रीराम शर्मा आचार्य ने शिक्षा को इस प्रकार सम्बोधित किया– 'शिक्षा से तात्पर्य मलूतः व्यक्तित्त्व के समग्र विकास से है, विद्वानों ओर मनीषियों ने शिक्षा की जो परिभाषाएँ दी हैं उन सबका समन्वित अर्थ व्यक्तित्त्व का समग्र विकास ही है– व्यक्तित्त्व और ज्ञान सम्पदा की दृष्टि से स्वयं कुछ उपार्जित करे और इस योग्य बने कि विरासत से सस्कार भी प्राप्त हो क्योंकि संस्कारों के अभाव में समग्र विकास की बात बेइमानी होगी।''1

शिक्षा का अर्थ केवल वस्तुओं या विभिन्न विषयों का ज्ञान मात्र नहीं है। यदि अर्थ को यहीं तक सीमित मान लिया जाए तो वह अज्ञान से कुछ ही अधिक हो सकता है और कई बार तो उससे भी अधिक भयावह परिणाम प्रस्तुत कर सकता है। ज्ञान की अथवा शिक्षा की सार्थकता वस्तुओं के ज्ञान के साथ–साथ अनुपयोगी और उपयोगी का विश्लेषण करने तथा उनमें से अनुपयोगी को त्यागने एवं उपादेय को ग्रहण करने की दृष्टि का विकास भी होना चाहिए तभी शिक्षा अपने सम्पूर्ण अर्थ को प्राप्त होती है। तत्त्व ''शिक्षा का अर्थ ही एक सद्इच्छा सद्भाव के प्रसार को करना है एक ऐसे ज्ञान का विस्तार शिक्षा तत्त्व में निहित है, जो व्यष्टि के माध्यम से समष्टि के कल्याण का केन्द्र बने, मानवीय मूल्यों को ही शिक्षा का केन्द्रीय तत्त्व बनाना चाहिए।''2

''शिक्षा का अर्थ सभी विषयों का पूर्ण ज्ञान तो नहीं है पर इतना अवश्य है कि व्यक्ति समाज के अन्य सदस्यों के साथ कदम मिलाकर चल सके इसलिए सभ्यता के विकास के साथ–साथ, शिक्षा व्यक्ति को अपने समाज के साथ जीना भी सिखाती है। शिक्षा का सीधा अर्थ सुसंस्कारिता का प्रशिक्षण है, इसे नैतिकता, सामाजिकता, सज्जनता, प्रमाणिकता आदि किसी भी नाम से पुकारा जा सकता है।''3

''वस्तुतः शिक्षा का उद्देश्य यह होना चाहिए कि पढ़ाई पूरी करने के उपरान्त विद्यार्थी सब ओर अपने लिए द्वार खुले देखे।''4

''व्यक्तिगत चरित्र में, आर्थिक ईमानदारी, नारी के प्रति निश्छल दृष्टि और कार्य के प्रति जवाबदेही और जिम्मेदारी,

© 2022 Published by Shodh Sagar. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://jrps.shodhsagar.com

शिक्षा के मूलभूत उद्देश्यों में होनी चाहिए।''5

इस प्रकार पं० श्रीराम शर्मा आचार्य ने शिक्षा के सन्दर्भ के साथ जिन मूल्यों को प्रस्तुत किया है वे हैं– सभ्यता का विकास, समाजीकरण, सुसंस्कृत, नैतिकता, कल्याण भावना, सज्जनता, आर्थिक ईमानदारी, चरित्र निर्माण, नारी के प्रति निश्छल दृष्टि, कार्य के प्रति जवाबदेही व जिम्मेदारी तथा व्यक्तित्व का समग्र विकास; जिन्हें शिक्षा के माध्यम से बालक में प्रवेशित व विकसित किया जाना आवश्यक है।

पं० श्रीराम शर्मा आचार्य ने पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकों को भी मूल्यपरक् शिक्षा के लिए महत्पूर्ण आधार माना है। उनके अनुसार– ''पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तकों में ऐसे विषय हों, जो भावी जीवन की समस्याओं का स्वरूप और समाधान समझने में काम आएं। उनका व्यवहार में उपयोग हो सके।''6

नई शिक्षा नीति 2020 के विजन में सन्निहित मूल्यः

नई शिक्षा नीति 2020 के विजन में स्पष्ट रूप से शिक्षा को राष्ट्रीय शिक्षा माना गया है जिसके लिए कहा गया है कि शिक्षा का विजन भारतीय मूल्यों से विकसित शिक्षा प्रणाली है। इसे हेतु इस नीति में परिकल्पित किया गया है कि हमारे संस्थानो की पाठ्यचर्या और शिक्षाविधि छात्रों में अपने मौलिक दायित्वों और संवैधानिक मूल्यों, देश के साथ जुड़ाव और बदलते विश्व में नागरिक की भूमिका और उत्तरदायित्वों की जागरूकता उत्पन्न करे। नीति के विजन में विद्यार्थियों में भारतीय होने का गर्व न केवल विचार में बल्कि व्यवहार, बुद्धि और कार्यों में भी तथा साथ ही ज्ञान, कौशल, मूल्यों और सोच में भी होना चाहिए।7 इस प्रकार नई शिक्षा नीति 2020 के विजन में ही पं० श्रीराम शर्मा आचार्य के शैक्षिक मूल्य स दव्य वहार, नैतिकता व समाज के सथ जुड़ाव एवं आत्म–निर्भरता को प्रमुख स्थान दिया गया है। यह भी कहा जा सकता है कि नई शिक्षा नीति 2020 का विज न ही उस की आत्मा है जोकि उस के क्रिय ान्वय न एवं फलीकरण का मलूाधार है। ये मल्य ही भारत की आर्थिक उन्नति, सांस्कृतिक संरक्षण के आधार स्तम्भ हैं जोकि राष्ट्र को सही दिशा में आगे बढ़ने का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

नई शिक्षा नीति के मूलभूत सिद्धान्तों में सन्निहित मूल्यः

इस शिक्षा नीति के मूलभूत सिद्धान्तों की संकल्पना में कहा गया है कि "शैक्षिक प्रणाली का उद्देश्य अच्छे इंसानों का विकास करना है– जो तर्कसंगत विचार और कार्य करने में सक्षम हों, जिसमें करूणा और सहानुभूति, साहस और लचीलापन, वैज्ञानिक चिंतन और रचनात्मक कल्पनाशक्ति, नैतिक मल्य और आधार हों।8 नई शिक्षा नीति के मूलभूत सिद्धान्तों के आठवें सिद्धान्त में उल्लिखित है– "नैतिकता, मानवीय और संवैधानिक मूल्य जेसे, सहानुभूतिए दूसरों के लिए सम्मान, स्वच्छता, शिष्टाचार, लोकतांत्रिक भावना, सेवा की भावना, सार्वजनिक संपत्ति के लिए सम्मान, वैज्ञानिक चिंतन, स्वतंत्रता, जिम्मदोरी, बहुलतावाद, समानता और न्याय"9 के लिए प्रत्येक संस्थान शिक्षा की व्यवस्था करेगा।

© 2022 Published by Shodh Sagar. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://jrps.shodhsagar.com

इसी क्रम में 20वें सिद्धान्त की धारणा है कि शैक्षिक प्रणाली का उद्देश्य होगा– कि "भारतीय जड़ों और गौरव से बंधे रहने, और ज हाँ प्रास ंगिक लग ेवहाँ भरत की समृद्ध और विविध प्राचीन और आधुनिक संस्कृति [1]व ज्ञान प्रणालियों तथा परंपराओं को सम्मिलित करना और उससे प्रेरणा प्राप्त करना;"[2] ऐसे व्यक्तियों का सृजन कर सके।

निष्कर्ष:

उपरोक्त विवेचन एवं विश्लेषण के आधार पर निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि नई शिक्षा नीति 2020 में वे स भी मल्ूय सन्निहित हैं जो कि पं० श्रीराम शर्मा आचार्य ने शिक्षा के मूलआधार के रूप में प्रस्तुत किये। राष्ट्र को सर्वोपरि मानते हुए पं० श्रीराम शर्मा आचार्य ने भी भारतीय ज्ञान प्रणाली को संस्कृति के संरक्षण का सशक्त माध्यम माना और उसके द्वारा ही बालक में मल्ूयों का विकास किया जाना चाहिए। नारी का सम्मान, समाज के प्रति जुड़ाव, चरित्र निर्माण, आर्थिक ईमानदारी एवं कार्य के प्रति उत्तरदायित्व एवं जवाबदेही जैसे मल्ूयों का निमार्ण केवल शिक्षा के माध्यम से ही सम्भव है जो कि नई शिक्षा नीति 2020 के आधार स्तम्भ के रूप में माने गये हैं।

[1]1 आचार्य श्रीराम शर्मा, शिक्षा और विद्या, अखण्ड ज्योति प्रकाशन मथुरा, 1998, पृ0 2.31
2 वही पृ0 सं0 2.23
3 वही पृ0 सं0 2.17
4 आचार्य श्रीराम शर्मा, हमारे पाँच पिछले और पाँच अगले कदम, अखण्ड ज्योति, वर्ष 2000, अंक–3, पृ0 50
5 आचार्य श्रीराम शर्मा, हमारे पाँच पिछले और पाँच अगले कदम, अखण्ड ज्योति, वर्ष 2000, अंक–3, पृ0 60
6 आचार्य श्रीराम शर्मा, शिक्षा एवं समाज निर्माण, अखण्ड ज्योति प्रकाशन मथुरा, वर्ष 43, अंक–2, पृ0 10। 7 राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार पृष्ठ.08
8 राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार पृष्ठ.06
9 राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार पृष्ठ.07
[2] राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार पृष्ठ.07

© 2022 Published by Shodh Sagar. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://jrps.shodhsagar.com